I Lecture Series No: - 54.

Online Class
Date - 8/2/2022,
Day - [illegible]
Time - 10:50 to 11:40 A.M

TOPIC,

(1) Videh mukti

Ans :=>

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy,
B.A part - II
Paper - (5.)
A.N.D. College Shahpur Patory,
Samastipur,

शंकर के अनुसार मोक्ष साधक को कोई नई वस्तु नहीं प्रदान करता। मोक्ष को तो प्राप्तस्य प्राप्ति कहा गया है। प्राप्त वस्तु को पुनः प्राप्त करना ही मोक्ष है। आत्मा मूलतः स्वतंत्र एवं मुक्त है। वह बंधनग्रस्त नहीं होती, हमें उसके बंधनग्रस्त होने का आभास मिलता है। मोक्षप्राप्ति के बाद आत्मा के कष्ट होने का प्रश्न नहीं उठता। वास्तव में विश्व मिथ्या है और अनेक आत्माएँ भी मिथ्या हैं। माया, बंधन एवं दुःख सभी मिथ्या हैं। अज्ञानवश व्यक्ति इन्हें वास्तविक समझता है। अज्ञान के

P.T.O.

(2.)

हटेत है वह इन पंक्तियों की निस्सारता समझ जाता है। और बंधन (कृत्रिम बंधन) से मुक्त हो जाता है। आत्मा जब अपने स्वरूप को भूल जाती है। तब वह बंधन (कृत्रिम बंधन) से मुक्त हो जाता है। आत्मा जब अपने स्वरूप को भूल जाती है। तब वह बंधन में जकड़ जाती है, जब उसे अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, आत्मा को भूले हुए स्वरूप की स्मरण हो जाना ही मोक्ष है। आत्मा अपने स्वरूप को भूलकर इधर-उधर उसी प्रकार भटकती फिरती है, जिस प्रकार कोई रमणी अपने गले में पड़े हार की खोज में इधर-उधर उसी प्रकार (भटकती) दौड़ती रहती है, जब रमणी को हार का पता चल जाता है तब उसे कोई वस्तु नहीं मिलती प्राप्त किया गया "धन"। "END"